मण्डी के मन्दिरों से प्राप्त मूर्तियों एवं चित्रों का हिमाचल के अन्य मन्दिरों से प्राप्त मूर्तियों एवं चित्रों से तुलनात्मक अध्ययन

कुमारी स्नेहलता
शोधकत्री, दृश्यकला विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

किसी भी कलाकार का प्रेरणा स्त्रोत, उसका परिवेश ही होता है। इसका उदाहरण है हिमाचल का शिल्प, मन्दिरों में पायी जाने वाली मूर्तियां व चित्र इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। हिमाचल के जिला मण्डी जिसे छोटी काशी के नाम से जाना जाता है तथा अन्य जिलों में पाये जाने वाले मन्दिरों से प्राप्त मूर्तीयों व चित्रों का अध्ययन, जनमानस को प्रदेश के शिलपियों द्वारा निर्मित इन कलात्मक, कला के प्रतीकों से अवगत करवाना, इन्हीं मन्दिरों में आज हमारी समृद्ध और आमूल्य सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित है। एक ओर जहां हमें मन्दिरों की वास्तुकला से लोगों की क्रियाशीलता का पता चलता है वहीं मन्दिरों की विशिष्ट कलात्मक अभिव्यक्ति को कलाकारों व शिल्पियों द्वारा अदभुत कलात्मक स्वरूप प्रदान किया गया है।

हिमाचल प्रदेश का मन्दिर–वास्तु, भारत की व्यापक सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। वास्तुकला, मूर्तिशिल्प, चित्रशिल्प हमारी संस्कृति के कितने महत्वपूर्ण अंग रहे हैं कला न केवल संस्कृति का माध्यम है बल्कि उसका आवश्यक अंग है।

प्राचीनकाल से ही कला का हमारी संस्कृति के विविध पहलुओं के विकास क्रम के अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान रहा है और जिला मण्डी के प्राचीन मन्दिर हमारी प्राचीन संस्कृति के अभिन्न अंग रहे हैं। उनमें स्थापित मूर्तियाँ काष्ठ। प्रस्तर, स्वर्ग, ताम्र अष्टधातु आदि से निर्मित है। कुछ मन्दिरों में यह प्रतिमाऐं (मुखौटों) के रूप में भी विद्यमान हैं। इन विषयों की जानकारी व कल के विषय में आधारभूत सामग्री तो पुरातात्विक सामग्री ही है, परन्तु कुछ मन्दिरों के विद्यमान अवशेष जो कि कला की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं वह उचित देखरेख के अभाव में अपना प्राचीन स्वरूप खोते जा रहे हैं।

मण्डी जिला में पाये जाने वाली कलात्मक मूर्तियों के निर्माण के अध्ययन से हमें यह भी ज्ञात होता है कि प्राचीन कलाकारों की पत्थरों, धातुओं तथा रंगों का पूर्ण ज्ञान था। उन कलाकारों के इस ज्ञान को मूर्तियों, कलाकृतियों व काष्ठ फल्कों के रूप में आज भी देखा जा सकता है। मूर्तियों की बनावट, वेशभूषा, आभूषण, शिरोभूषण, केश–विन्यास वस्त्र व शैली के ज्ञान से सुसज्जित यह मूर्तियाँ अत्याधिक पौराणिक एवं कलात्मक हैं।[1]

कुछ देवी एवं देवताओं की मूर्तियाँ अत्यन्त विलक्षण, भयंकर हैं तो कुछ शांत व हंसमुख रूप में कलाकृत हैं। इन मूर्तियों द्वारा शिल्पी ने भय, क्रोध वशालीनता आदि भावनाओं को मूर्तिरूप प्रदान किया है। इसी प्रकार देवी–देवताओं की मूर्तियाँ ईश्वर के रूप की प्रतीक हैं जिनकी सुन्दरता को परिभाषित करना कठिन कार्य है। जिला मण्डी से प्राप्त मूर्तियां एवं चित्रों की तुलना हिमाचल प्रदेश के जिला चम्बा की मूर्तियों बैजनाथ, कांगड़ा, बजौरा, कुल्लू आदि जिलों में पाये जाने वाले मन्दिरों से की है। कारण मन्दिरों की निर्माण शैली, मूर्ती विन्यास में काफी समानताऐं होने के कारण यह कार्य

अत्यधिक रोचक रहा। मूर्तियों में समानता के साथ–साथ कुछ भिन्नता भी है। एक और दिलचस्प बात है कि हिमाचल वह भू–भाग है जहां आदि शक्ति तथा शिव को अधिक प्रधान माना गया। अधिकतर मन्दिरों के शक्ति एवं शिव को स्थापित देखा हर मन्दिर में शिव व शक्ति के अलग–अलग रूप स्थापित है। कहीं शिव को मूर्ती रूप तथा कहीं लिंग के रूप में पूजा जाता है।

यूं तो मण्डी का रियासती राज्य माधोराव को समर्पित है किन्तु मुख्य उत्सव यहां शिवरात्री का मनाया जाता है मण्डी के राजा अजबर सेन ने 1527में व्यास नदी के किनारे जब राजधानी बसाई तो सर्वप्रथम भूतनाथ मन्दिर स्थापित किया और फिर यहां अधिकतर मन्दिर शैव पर आधारित बने।[2]

शिव परम्परा की समर्पित एक और महत्वपूर्ण मन्दिर बैजनाथ कांगड़ा में है। दूसरा महत्वपूर्ण मन्दिर बजौरा का शिव मन्दिर है जिसे आठवीं सदी का माना गया। बजौरा के अतिरिक्त कुल्लू में जो मण्डी की भांति रघुनाथ जी की समर्पित हुआ, बिजली महादेव, जगतसुख, नग्गर, दलाश, निमण्डी में शिव मन्दिर है। अतः इससे यह सिद्ध होता है कि मण्डी व कुल्लू दोनों स्थानों में शैव परम्परा पुरानी है तथा वैष्णव धर्म यहां बाद में आया।

उमा महेश ममलेश्वर महादेव (करसोग) तथा गौरी शंकर प्रतिमा (लक्ष्मीनारायण परिसर चम्बा)

हिमाचल प्रदेश की भूमि, देव भूमि के नाम से प्रचलित है और आम लोगों की आस्था के प्रतीक ये देवी अथवा देवता मण्डी ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी देवी तथा देवता पूजनीय है। हिमाचल की समस्त भूमि शिव तथा दुर्गा का निवास स्थान मानी जाती है।

चित्र संख्या – 1
(उमा महेश करसोग मण्डी)

शैव शक्ति तथा विष्णु के अनुयायी इस प्रदेश में साथ–साथ विकसित हुए। शैव, शिव भगवान की श्रेष्ठ मानती थे तथा इनकी मूर्ति पांचवीं सदी से पूर्व कहीं भी प्राप्त नहीं हो पायी है। जिस प्रकार जिला मण्डी की शिव की प्रधानता के कारण शिव नगरी कहा गया उसी प्रकार हिमाचल के जिला चम्बा को भी शिव का स्थान माना गया है यहां के मन्दिरों का मूर्तिशिल्प तथा मन्दिर निर्माण शैली मण्डी के मन्दिरों से परस्पर समानता रखता है।

शहर के बीच में स्थापित लक्ष्मी नारायण मन्दिर का सौन्दर्यकरण शहर की शोभा बढ़ा देता है जिसमें कुछ छह मन्दिर है जिनमें से तीन भगवान शिव तथा तीन भगवान विष्णु की समर्पित है। लक्ष्मीनारायण परिसर में स्थापित गौरी शंकर प्रतिमा मन्दिर के गर्भ गृह में स्थापित है तथा ममलेश्वर महादेव (करसोग) में उमा महेश प्रतिमा भी मन्दिर के गर्भ गृह में ही स्थापित है दोनों प्रतिमाऐं अपनी कलात्मक के लिए विश्वविख्यात हैं। दोनों मन्दिरों की प्रतिमाऐं मन्दिर के गर्भगृह में पीठिका पर स्थापित की गई हैं।

गौरी शंकर प्रतिमा (चम्बा) नदी के साथ स्थापित है जबकि करसोग के ममलेश्वर महादेव की उमा महेश प्रतिमा सम्पूर्ण शिव परिवार के साथ स्थापित है। जिसमें भगवान शिव, पार्वती, गणपति, कार्तिकेय, नन्दी, शेषनाग, सैनिक वीरभद्र एक साथ स्थापित हैं। चम्बा की प्रतिमा समस्त उतर भारत की गुर्जर प्रतिहार काली एक मात्र प्रतिमा है जो कि इतनी विशाल आकार में पीतल धातु से निर्मित है। जबकि करसोग के ममेल में स्थापित प्रतिमा अष्टधातु से निर्मित है और समस्त मण्डी क्षेत्र की यह एक मात्र प्रतिमा है जिसमें समस्त शिव परिवार एक साथ स्थापित है।

चित्र संख्या – 2
(गौरी शंकर प्रतिमा चम्बा लक्ष्मी नारायण परिसर)

चम्बा की गौरी शंकर प्रतिमा तथा ममलेश्वर की उमा महेश प्रतिमा दोनों ही पांचवीं शताब्दी की मानी जाती है दोनों मूर्तियाँ पीठिका पर स्थापित की गई है। दोनों मूर्तियों में यह भी समानता है कि इसमें भगवान शिव की चतुर्भुजधारी बनाया गया इस प्रकार का अंकन समस्त उत्तर भारत के कम देखने को मिलता है। दोनों प्रतिमाओं में भगवान शिव का दाहिना अपर का हाथ अक्षमाला सहित अभय मुद्रा में दर्शाया गया है जो कि दोनों मूर्तियों की परस्पर समानता की दर्शाता है।

चम्बा की मूर्ती में भगवान शिव के तीन मुख हैं जबकि ममेल करसोग की शिव प्रतिमा केवल एकमुखी है इस मूर्ति के पीछे शिव की अन्य प्रस्तर प्रतिमा है जिसके दर्शन नहीं किए जाते हैं। ममलेश्वर महादेव में भगवान शिव का मुख अत्यन्त सौम्य तथा आकर्षक है जबकि लक्ष्मी नारायण मंदिर में भगवान शिव का सामने का मुख सौम्य दाहिना मुख भयंकर तथा बांया शांत रूप में अलंकृत है।

दोनों मूर्तियों में शिव के सिर पर मुकुट दर्शाये गए हैं परन्तु चम्बा की शिव मूर्ति में यह मुकुट ऊंचा व तिकोना अलंकृत है जबकि ममलेश्वर महादेव में स्थापित प्रतिमा में मुकुट ऊंचा तथा शीर्ष से गोलाई लिए अलंकृत है।

दोनों मन्दिरों में भगवान शिव व पार्वती के मुकुटों का अलंकरण लगभग समान किया गया है। साथ ही दोनों मन्दिरों की प्रतिमाओं के सुन्दर वस्त्राभूषण तथा आलंकरण प्रस्तुत किया गया है। दोनों मूर्तियों में शिव के गले में सुन्दर हार दर्शाया गया है परन्तु दोनों में असमानता है। चम्बा की शिव प्रतिमा में हार के मध्य में छाती पर कण्ठीनुमा हीरा दर्शाया गया है परन्तु ममलेश्वर में यह रूद्राक्ष से बना अलंकृत है ममलेश्वर मन्दिर शिव की नाभी के हीरा स्थापित था कहा जाता है कि यह हीरा अब चोरी हो गया है और उसके स्थान पर नकली हीरा स्थापित किया गया है।[3]

दोनों प्रतिमाओं में सुन्दर केश विन्यास, कानों में कुण्डल तथा लम्बा यज्ञोपवीत, स्थापित है परन्तु चम्बा की प्रतिमा में यज्ञोपवीत में सर्प लटका दर्शाया गया है। दोनों प्रतिमाओं में हाथों में कंगन तथा भुजाओं में भुजबंध धारण किए हैं। चम्बा की मूर्ती में भगवान शिव की धोती अत्यन्त कलात्मक अंकित है जो

अत्यन्त सुन्दर व आकर्षक प्रतीत होती है। जबकि ममलेश्वर मन्दिर में भगवान शिव का कहीं से निचला भाग धारीधार वस्त्र से ठका रहा है।

दोनों मूर्तियों में शिव के बाएं भाग में मां पार्वती की सुन्दर प्रतिमा गढ़ी गई है। दोनों मूर्तियों द्विभुजी दर्शायी गई हैं दोनों मूर्तियों में पार्वती मां के सुन्दर रूप को दर्शाया गया है। हाथों की उंगलियों का लयदार बनावट होना कलाकारों के उतम मूर्ती शिल्प का परिचायक है। दोनों मूर्तीयों में सुन्दर भुजबन्द दर्शाये गए है। चम्बा की मूर्ती में पार्वती के कंधे कम चौड़े तथा ममलेश्वर की प्रतिमा में पार्वती के कंधे चौड़े दर्शाए गए हैं।

गले में रत्नों की जड़ित हार का अंकन किया गया है। ममेल की पार्वती प्रतिमा को गुलाबी रंग के वस्त्र पहनाए गए हैं जबकि चम्बा की मूर्ती में यह अंकन धातु प्रतिमा पर ही अलंकृत है। ममेलश्वर की पार्वती प्रतिमा में मुकुट गोलाकारं अंकित है जबकि चम्बा की मूर्ती में मां पार्वती ने त्रिकोना तथा ऊंचा मुकुट धारण कर रखा है। चम्बा व ममलेश्वर महादेव की मूर्तियों के पीछे साथ में नन्दी की सुन्दर प्रतिमा बनाई गई है परन्तु गौरीशंकर (चम्बा) में भगवान शिवा का हाथ नन्दी के शीर्ष के साथ त्रिशूल लिए दर्शाया गया है। दोनों मूर्तियों में नन्दी हृष्ट–पुष्ट बनाया गया है जो परम्परा समानता लिए हुए है। दोनों मूर्तियों में नन्दी के गले में घंटी का अंकन किया गया है।

लक्ष्मी नारायण मन्दिर में स्थापित प्रतिमा तथा ममलेश्वर महादेव में स्थापित शिव पार्वती प्रतिमा के पीछे धातु निर्मित कलात्मक तोरण स्थापित है चम्बा में तोरण के ऊपर तीन छत्र अंकित किए गए हैं जबकि जिला मण्डी के ममलेश्वर मन्दिर में शिव पार्वती प्रतिमा के पीछे तोरण पर दोनों चांदी के छत्र छत से सीधे तोरण पर लटकते हुए स्थापित किये हैं। जबकि लक्ष्मी नारायण मन्दिर में ये छत्र कलश पर स्थापित हैं। चम्बा में तोरण पर चांद पुष्प तथा पत्तियों का अंकन किया गया है तथा ममेल में सर्पमुख तोरण पर अलंकृत हैं। इस प्रकार दोनों मन्दिरों में देव एक हैं अर्थात शिव एवं पार्वती विराजमान है परन्तु मूर्तियों तथा अलंकरण में कुछ समानताएं व असमानताऐं हैं जो कि इनके तुलनात्मक अध्ययन में सहायक सिद्ध हुई।

शिव पार्वती पाषाण प्रतिमा मगरू महादेव छतरी मण्डी तथा शिव पार्वती बहना महादेव कुल्लू

मगरू महादेव जिला मण्डी में स्थापित कलात्मक मन्दिर है जिसके गर्भगृह में भगवान शिव तथा पार्वती पाषाण प्रतिमा के रूप में स्थापित हैं वहीं बैहणा महादेव मन्दिर कुल्लू में भगवान शिव को समर्पित हैं। मन्दिर में मुख्य प्रतिमा रूप में भगवान शिव शिवलिंग रूप में पूजित हैं परन्तु मन्दिर में स्थापित अनेक मूर्तिशिल्प को पाषाण मूर्तियों के रूप में देखा जा सकता है उन्हीं मे से एक भगवान शिव पार्वती की पाषाण प्रतिमा की स्थापना मन्दिर में की गई है जो प्राचीन होने के साथ–साथ कलात्मक है।

मण्डी तथा कुल्लू दोनों स्थानों पर स्थापित भगवान शिव–पार्वती की पाषाण–प्रतिमा शिला पर अंकन भांति प्रतीत होती है। दोनों प्रतिमाऐं आसन अवस्था में अवस्थित हैं। अर्थात शिव–पार्वती बैठी अवस्था में है। मण्डी में मगरू महादेव प्रतिमा में मां पार्वती की शिव की बांयी जंघा पर आभूषणों से सुसज्जित दर्शाया गया है। ठीक उसी तरह कुल्लू की प्रतिमा में भी मां पार्वती शिव की दाहिनी जंघा पर

चित्र संख्या – 3
(शिव पार्वती बहना महादेव कुल्लू)

विराजमान है। उनकी कलात्मक प्रतिमा की यहां उभरे स्तनों वाला दर्शाया गया है। भगवान शिव की उनके प्रिय आयुद्धों के साथ दर्शाया गया है। दोनों प्रतिमाओं में भगवान शिव के दाहिने हाथ में त्रिशूल अंकित है उंगलियों की बनावाट अति कलात्मक है कुल्लू की अपेक्षा मण्डी से प्राप्त प्रतिमा में उंगलियों को ज्यादा लयदार दर्शाया गया है। शिव के शीर्ष पर सुन्दर मुकुट दर्शाया गया है कुल्लू की प्रतिमा में मुकुट ऊंचा एवं ऊपरी हिस्सा गोलाई में दर्शाया गया है जबकि मण्डी से प्राप्त प्रतिमा में मुकुट नोकदार तथा अलंकरण के साथ दर्शाया गया है।[4]

मगरु महादेव मण्डी शिव प्रतिमा में कानों की सामान्य से बड़ा दर्शाया गया है। जिसमें कर्णफूल दर्शाए गए हैं। कुल्लू प्रतिमा में कान सामान्य अलंकृत हैं। मण्डी प्रतिमा में गले में छाती को मनकों रूपी माला लम्बाई में दर्शायी गई है। जबकि कुल्लू प्रतिमा में गले से चिपका लहरदार हार दर्शाया गया है।

दोनों प्रतिमाओं में मां पार्वती की सुन्दर प्रतिमा गढ़ी गई है। प्रतिमा में मां पार्वती की द्विभुजी दर्शाया गया है। कुल्लू प्रतिमा में उभरे वक्ष दर्शाए गए हैं। मण्डी प्रतिमा में माँ पावर्ती की भुजाऐं लम्बी दर्शाई गई हैं।

कुल्लू प्रतिमा में शिव पार्वती शिवगण वाहन नन्दी पर सवार हैं। मण्डी में स्थापित शिव पार्वती के पीछे तोरण शिला में सिर के ठीक ऊपर भगवान गणपति अलंकृत हैं तथा कुछऔर छोटी–छोटी अलंकृत प्रतिमाओं को नृत्य गायन व वादन यन्त्रों के साथ देखा जा सकता है। कुल्लू में स्थापित मूर्ति मण्डी की अपेक्षा ज्यादा पुरानी प्रतीत होती है तथा समय के साथ–साथ अपनी कलात्मकता लुप्त हुई नज़र आ रही है जिसके कारण उसकी भाव भंगिमाओं तथा मुखाकृतियों को दर्शाना कठिन है। मण्डी की मूर्ति में भी लोगों के द्वारा सिन्दूर आदि लगाने से वास्तविक रूप खराब होता प्रतीत होता है यह पूर्ण रूप से निषेध होना चाहिए ताकि भविष्य में आने वाले कलाविदों तथा अपनी नवीन पीढ़ियों तक इनके वास्तविक स्वरूप को बचाया जा सके इनके संरक्षण के माध्यम से हम अपनी इन कला कृतियों को संरक्षित रखा सकते हैं जो कि हमारी प्राचीन संस्कृति की परिचायक हैं।

चित्र संख्या – 4
(शिव पार्वती बहना महादेव कुल्लू)

त्रिलोकीनाथ प्रस्तर प्रतिमा मण्डी तथा त्रिमुखी शिवलिंग चम्बा

भगवान शिव के अनेक नाम हैं जिनमें से त्रिलोकीनाथ भी एक है। शिखर शैली में निर्मित मन्दिर भगवान शिव के त्रिमुखी प्रतिमा के रूप में त्रिलोकीनाथ मन्दिर मण्डी में स्थित है। वहीं शिव त्रिमुखी शिवलिंग रूप में चम्बा के लक्ष्मीनारायण मन्दिर समूह के पांचवें मन्दिर त्रयम्बकेश्वर में त्रिमुखी शिवलिंग रूप में स्थापित हैं।

चित्र संख्या – 5
(त्रिलोकीनाथ शिव मण्डी)

मण्डी के त्रिलोकिनाथ में शिव त्रिमुखी प्रतिमा के रूप में स्थापित हैं तथा चम्बा में शिव रूपी त्रिमुखी शिवलिंग सफेद संगमरमर का बना है। दोनों ही मन्दिरों में स्थापित शिव जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है कि तीन मुख अर्थात त्रिमुखी स्वरूप में स्थापित हैं जो कि इनमें समानता को दर्शाता है परन्तु मण्डी जिला में स्थापित यह प्रतिमा काफी प्राचीन होने के कारण अपनी कलात्मकता को धीरे–धीरे लुप्त हो रही है। यह मूर्ती मन्दिर के गर्भगृह में (2.55 मीटर ग 2.55 मीटर) की है।

जबकि चम्बा में भगवान शिव की त्रिमुखी शिवलिंग नवीन है तथा कलात्मक है। चम्बा के त्रयम्बकेश्वर मन्दिर में स्थापित लिंग में तीन सुन्दर मुखों का अंकन किया है। इन मुखों के सिर पर जटा, कानों में चक्र कुण्डल तथा गले में सुन्दर नायकमणि माला का अंकन किया गया है दूसरी ओर मण्डी में स्थापित भगवान त्रिलोकीनाथ ने सफेद वस्त्रधारण किए हैं जो कि उनके शांत रूप को दर्शाता है। उनके गले में रुद्राक्ष माला सुशोभित है तथा गले में सर्प विराजमान है चम्बा में त्रिमुखी शिवलिंग में योनी को पीले वस्त्र से ढका हुआ है। तथा साथ में गणपति भगवान स्थापित हैं।

चित्र संख्या – 6
(त्रिमुखी शिवलिंग – चम्बा)

मण्डी में त्रिलोकीनाथ जी को गोद में पार्वती मां लाल रंग के वस्त्रों में विराजमान है। जिनके नेत्र बड़े–बड़े दर्शाए गए हैं। उनके साथ त्रिशूल तथा डमरू साथ में अंकित है। इस प्रकार दो अलग–अलग क्षेत्रों में स्थापित शिव प्रतिमाऐं जिनका नाम तो एक है परन्तु उनकी व उनके स्वरूप की रचना कलाकारों ने अपने ढंग से की है। जो कला के परवर्ती प्रभाव को दर्शाती है।

ममलेश्वर महादेव (विष्णु प्रतिमा) करसोग मण्डी व वैकुण्ठ प्रतिमा (हरिराय मन्दिर) चम्बा

जिला मण्डी के करसोग क्षेत्र के अन्तर्गत स्थापित मन्दिर ममेलश्वर महादेव के सभागृह में स्थापित विष्णु प्रस्तर प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र है क्योंकि मन्दिर तो भगवान शिव को समर्पित है परन्तु वहां पर विशाल विष्णु मूर्ती का होना वैष्णव धर्म के प्रभाव को दर्शाता है। वहीं दूसरी ओर जिला चम्बा के चौगान के उतरी छोर पर स्थापित हरिराय मन्दिर भगवान विष्णु (वैकुण्ठ) की समर्पित है।

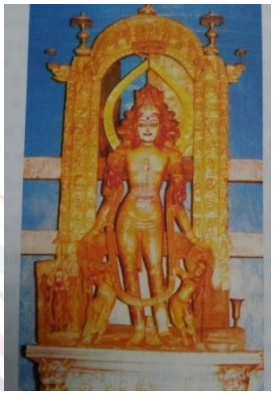

चित्र संख्या – 7
(विष्णु प्रतिमा – चम्बा)

यहां भगवान विष्णु की स्थापना गर्भगृह में मुख्य रूप में की गई है। ममेल की विष्णु प्रतिमा प्रस्तर प्रतिमा है जबकि चम्बा में स्थापित भगवान विष्णु की प्रतिमा धातु से बनी है। जनश्रुतियों के अनुसार चम्बा से यह विष्णु मूर्ती चोरी हो गई थी परन्तु 8 जुलाई 1971 को इस मूर्ती को चम्बा वापिस पहुंचाया गया तथा इसकी पुनः स्थापना की गई। दोनों ही क्षेत्रों की यह विष्णु प्रतिमाऐं कलाकारों की गूढ़ कला की परिचायक हैं।

दोनों मूर्तियों को देखने पर यह एक सी प्रतीत होती हैं परन्तु इनमें काफी भिन्नता है। ममलेश्वर महादेव में विष्णु प्रतिमा द्विभुजी है जबकि चम्बा (हरिराय मन्दिर) में यह प्रतिमा चतुर्भुजी है। दोनों प्रतिमाओं में भगवान विष्णु के सुन्दर धोती पहनाई गई है परन्तु चम्बा की मूर्ती में धोती की सलवाटे देखते ही बनती हैं और ममलेश्वर महादेव में धोती साधारण है। दोनों मूर्तियों का अलंकरण सुन्दर तथा कलात्मक दृष्टिगोचर होता है।[5]

चम्बा की मूर्ती में विष्णु के सिर पर सुन्दर तिकोना मुकुट दर्शाया गया है जबकि ममलेश्वर महादेव में मुकुट काफी ऊंचा तथा ऊपरी भाग गोलाई में दर्शाया गया है। मुकुट पर आलंकरण बहुत सुन्दर किया गया है। दोनों मूर्तियों में हार परम्परा समानता लिए अलंकृत है जिसके मध्य में छाती पर हीरक दर्शाया गया है।

दोनों प्रतिमाओं में हाथों में कंगन तथा भुजा बंन्ध दर्शाए गए हैं कटि पर करघनी, पैरों में नुपुर सुन्दर तथा कलापूर्ण अंकित किए गए हैं।

चित्र संख्या – 8
(विष्णु प्रतिमा–करसोग मण्डी)

चम्बा से प्राप्त मूर्ती में आंखें चांदी से तथा बड़ी–बड़ी बनाई गई है। लम्बी नाक तथा कमल की पंखुड़ियों की भांति होंठ गोल ठोडी बहुत आकर्षक है वहीं ममलेश्वर महादेव मन्दिर में भगवान विष्णु के अदभुत स्वरूप की रचना की गई है उनका सौम्य मुख्य नाक छोटी तथा होंठ गोलाई में अलंकृत हैं अतः उनका स्वरूप सौम्य है। चम्बा तथा ममलेश्वर की विष्णु मूर्तियों के मुख्य मुख के दोनों ओर सूकर रूप मुख बने हैं। जिसमें भगवान वाराह जी के दिव्य स्वरूप के दर्शन होते हैं। दोनों मूर्तियाँ

सुन्दर पीठिका पर अंकित हैं। दोनों मूर्तियों के पैरों के बीच में भू देवी को दर्शाया गया है। दोनों प्रतिमाओं में भू–देवी भगवान हरि के चरण स्पर्श करते हुए अंकित की गई हैं।

ममलेश्वर करसोग में स्थापित विष्णु मूर्ती के दोनों हाथों में शंख चक्र एवं गदा धारण किये हुए गढ़ा गया है जबकि हरिराय मन्दिर में भगवान वैकुण्ठ को चतुर्भुजाधारी बनाया गया है। बांए ऊपर के हाथ में शंख, नीचे का दायां हाथ गदा तथा बांया हाथ चक्र पुष्प पर अंकित है।

दोनों मूर्तियों में गदा देवी तथा चक्रपुरुष को सुन्दर वस्त्राभूषण में अंकित किया गया है गदा देवी के पैरों में पायल, कमर में करघनी, हाथों में चूड़ियां एवं भुजाबंद व गले में हार का अलंकरण हैं कमर पतली तथा स्तन उभरे हुए दर्शाए गए हैं। ममलेश्वर की विष्णु प्रतिमा के साथ स्थापित गदा देवी दाहिनी ओर झुकी तथा मुख विष्णु की ओर मुड़ा हुआ है जबकि ममेल में गदा देवी कम झुकी हुई तथा मुख सीधा अलंकृत है।

चित्र संख्या – 9
(विष्णु प्रतिमा बशेशर महादेव

ममलेश्वर की विष्णु प्रतिमा प्रस्तर (काले पत्थर) से निर्मित है जबकि चम्बा की विष्णु प्रतिमा धातु निर्मित है। मुख्य मूर्ती के बांयी ओर चक्र पुरुष अंकित हैं चम्बा की प्रतिमा में चक्र पुरुष को मोटे पेट वाला दर्शाया गया है ममेल में चक्र पुरुष समान पेट वाला अंकित है। दोनों प्रतिमाओं में चक्रपुरुष की भी सुन्दर वस्त्राभूषण से युक्त अंकित किया है।

भगवान विष्णु के हाथों में उनके आयुध शंख–आकाश को चक्र वायु को, गदा आग को तथा पदम पानी को दर्शाते हैं। उनके पैरों के मध्य स्थापित देवी, भू–देवी पांचवा तत्व है। अर्थात् इन्हीं पांच तत्वों से ही सृष्टि का निर्माण होता है।

ममलेश्वर में विष्णु भगवान के मुख्य मुख के दोनों ओर सूकर मुख हैं जबकि चम्बा की इस मूर्ती में बांया मुख वराहा, दांहिना नरसिंह अंकित किया गया है। चम्बा की मूर्ती के पीछे तोरण गोलाकार है तथा ममलेश्वर के भी तोरण गोलाकार है परन्तु ममेल में तोरण पर कई लघु मूर्तियाँ व सूक्ष्म अलंकरण देखा जा सकता है।

विष्णु प्रतिमा ममलेश्वर महादेव तथा विष्णु प्रतिमा बशेशर महादेव मन्दिर, बजौरा कुल्लू

मण्डी जिला में करसोग क्षेत्र में शिव मन्दिर के सभागृह में स्थापित द्विभुजी विष्णु प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र है वहीं कुल्लू के बजौरा में बशेशर महादेव मन्दिर भी शिव को समर्पित है इसमें पश्चिमी ओर स्थापित भगवान की प्रतिमा मण्डी की विष्णु प्रतिमा से काफी मिलती–जुलती है। दोनों मूर्तियों का सुन्दर अलंकरण किया गया है जो कलात्मक महत्व की दृष्टि से उत्कृष्ट है।

विष्णु पुराण के अनुसार भगवान विष्णु के विभिन्न रूपों का वर्णन हुआ है जिसके अनुसार विष्णु भगवान दो भुजाओं वाले चार अथवा आठ भुजाओं वाले बताए गए हैं।

कुल्लू तथा मण्डी से प्राप्त से दुभुजी विष्णु प्रतिमाऐं पाषाण निर्मित हैं जो परस्पर इनमें समानता को दर्शाती है। ममलेश्वर महादेव में प्रतिमा काले पत्थर से बनाई गई है जबकि कुल्लू की प्रतिमा स्थानीय पत्थर निर्मित है।

दोनों प्रतिमाएं पीठिका पर निर्मित हैं जिसके पीछे तोरण निर्मिाण किया गया है ममलेश्वर से प्राप्त मूर्ती में विष्णु के सिर के पीछे आभाचक्र दर्शाया गया है। दोनों मूर्तियों में मुकुट ऊंचा दर्शाया गया है परन्तु ममलेश्वर में स्थापित मूर्ति के मुकुट में जयमितीय रेखांकन दिखाई देता है जबकि कुल्लू में स्थापित प्रतिमा में मुकुट में बारीक कला रचना की गई है। ममेल में स्थापित विष्णु प्रतिमा एक मुखी है। जिसमें भगवान विष्णु को शांत स्वरूप में अलंकृत किया है वहीं कुल्लू की प्रतिमा में विष्णु के तीन मुख दर्शाए गए हैं सामने का मुख सौम्य, दाहिना सिंह तथा बांया बराह इस मूर्ती में दृष्टिगोचर होते हैं।

चित्र संख्या – 10
(विष्णु प्रतिमा – ममलेश्वर महादेव

कुल्लू की प्रतिमा में बांया हाथ में शंख तथा दाएं हाथ में चक्राकार पुष्प दर्शाया गया है। दोनों मूर्तियां स्थानक हैं ममलेश्वर में विष्णु प्रतिमा में बांऐं हाथ में शंख तथा दांया हाथ अभय मुद्रा में दर्शाया गया है।

ममलेश्वर से प्राप्त मूर्ती में सिर के पीछे आभा चक्र स्थापित है। दोनों प्रतिमाओं की पृष्ठभूमि पर कलात्मक तोरण है कुल्लू की प्रतिमा में तोरण पर छोटी–छोटी मानवाकृतियों का अलंकरण है जिसे कलाकार द्वारा बड़ी कुशलता से गढ़ा गया है तोरण का ऊपरी भाग चापाकार दर्शाया गया है। यह अर्धगोलाकार प्रतीत होता है।

विष्णु प्रतिमा ममेल में तोरण पर छोटी–छोटी कृतियाँ अंकित हैं तथा प्रतिमा के पीछे से इसे दो स्तंभनुमा दर्शाया गया है। दोनों प्रतिमाओं में गर्व से चिपका हार तथा टांगों को छूती बनमाला में दर्शाया गया है। कटि पर धोती दर्शायी गई है ममेल की प्रतिमा में धोती की बनावट ज्यादा कलात्मक है तथा पैरों में भू–देवी को दर्शाया गया है कुल्लू की प्रतिमा में पैरों के पास आकृतियों का निर्माण नहीं किया गया है।

चतुर्भुजी गणपति सिद्धभद्रा मण्डी तथा चतुर्भुजी गणपति कुल्लू बहना महादेव

सिद्धभद्रा मन्दिर प्रांगण मण्डी में स्थापित गणपति की पाषाण प्रतिमा विशाल है जिसका मुख मन्दिर के सामने की ओर है। चतुभुर्जी विष्णु की एक अन्य प्रतिमा विश्वेश्वर महादेव मन्दिर कुल्लू में स्थापित है

यह प्रतिमा पाषाण निर्मित है तथा प्राचीन वास्तुकला एवं शिल्प की दृष्टि से श्रेष्ठ है। कुल्लू में स्थापित चतुर्भुजी विष्णु के शीष पर सुन्दर मुकुट सुशोभित जो छोटा व कलात्मक है सिद्धभद्रा मन्दिर में मुकुट इसकी अपेक्षा बड़ा तथा त्रिकोना अंकित है। दोनों प्रतिमाओं में गले में माला अंकित है परन्तु मण्डी में स्थापित प्रतिमा में यह अपेक्षाकृत लम्बी है। चम्बा से प्राप्त प्रतिमा में आंखें गोल दर्शायी गई हैं जबकि मण्डी से प्राप्त प्रतिमा में आंखें छोटी–छोटी दर्शायी गई हैं।

चम्बा से प्राप्त मूर्ती में गणपति का पेट मोटा तथा सुडौल अंकित है परन्तु मण्डी से प्राप्त प्रतिमा में पेट मोटा तथा बाहर की ओर उभार लिए अंकित है। चम्बा की चर्तुभुज गणपति प्रतिमा अलंकृत पीठिका पर स्थापित है इस प्रतिमा के निम्न भाग में गणेश जी के पैरों के दोनों ओर कई लघु आकृतियों का आभास होता है। वर्तमान समय में खंडित होने के कारण केवल इनके बारे में अनुमान लगाया जा सकता है। सिद्धभद्रा मन्दिर में गणपति प्रतिमा पर सिंदुर का लेप चढ़ाया गया है।

चित्र संख्या – 11
(चर्तुभुजी गणपति सिद्धभद्रा मण्डी)

चित्र संख्या – 12
(चतुर्भुजी गणपति –कुल्लू बहना महादेव)

नन्दी प्रतिमा पांगणा शिवद्वाला करसोग मण्डी तथा नन्दी प्रतिमा चन्द्रशेखर मन्दिर चम्बा

जिला मण्डी के ऐतिहासिक स्थल पांगणा के शिवद्वाला के प्रवेश द्वार के सामने स्थापित शिव गण, वाहन नन्दी की स्थानक प्रतिमा कलात्मकता के साथ–साथ प्राचीन भी है। प्रायः सभी शिव मन्दिरों में नन्दी प्रतिमा की स्थापना आम बात है परन्तु करसोग के लगभग 108 शिवमन्दिरों में इस प्रकार की

चित्र संख्या – 13
(नन्दी प्रतिमा – चम्बा)

चित्र संख्या – 14
(नन्दी प्रतिमा – पांगणा शिवद्वाला)

प्रतिमा केवल यही स्थापित है। यह एक पाषाण प्रतिमा है। इसी प्रकार नन्दी की प्रस्तर प्रतिमा चम्बा के चन्द्रशेखर मन्दिर में स्थापित है दोनों मूर्तियां प्रस्तर हैं परन्तु पांगणा में स्थापित नन्दी के दाएं भाग में आसन अवस्था में एक अन्य लघु नन्दी भी स्थापित है। स्थानक नन्दी प्रतिमा की पूंछ एक मनुष्य ने पकड़ रखी है।

चम्बा में स्थापित इस पाषाण प्रतिमा में नन्दी सुन्दर आंखें सिर पर सींगों के पास आभूषण, गले में तीराआकार तीखरी माला तथा पीठ पर सुन्दर आलंकृत कपड़ा अंकित किया गया है।

जबकि पांगणा में शिवद्वाले में स्थापित नन्दी की पीठ पर भी कलात्मक आंकन देखा जा सकता है यह कार्य महीन रेखाओं द्वारा अंकित है। गले में हारनुमा घण्टी अंकित है तथा सींगों के पास कलात्मक आभूषण अंकित है। साथ में स्थापित बाल लघु नन्दी की पीठ पर कपड़ा अंकित है जो सादा है तथा उसकी पट्टी पर अलंकरण किया गया यह पाषाण प्रतिमाऐं अदभुत हैं तथा स्थानक कलाकारों की परिचायक हैं।[6]

संन्दर्भ ग्रंथ

हमीदुल्ला, प्राचीन भारतीय वेशभूषा, रोशन लाल अल्काजी, अनुवाद, प्रकाशक, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया
हरनोट, एस.आर., हिमाचल के मन्दिर व उनसे जुड़ी लोक–कथाऐं, मिनर्वा बुक हाउस, 46, दी माल, शिमला
विशिष्ठ, सुदर्श, हिमाचल के दर्शनीय स्थल, एरागान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली, अपर ग्रांऊड प्लेर, 137, पृ.106
पाण्डेय, योगेश चन्द्र, भारतीय कला एवं संस्कृति, अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड
वर्मा, डॉ. चमन लाल मण्डयाली संस्कृति एवं सांगीतिक अध्ययन
वैद्य, किशोरी लाल हिमाचल के मन्दिर,
मिश्र, डॉ. इन्दुमती प्रतिमा विज्ञान, पृ. 48
श्रीवास्तव, डॉ. बृजभूषण प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, पृ. 278
Selhi, S.M. Temple Art of Chamba, Hari Chauhan, Indus Publishing Company, p. 41